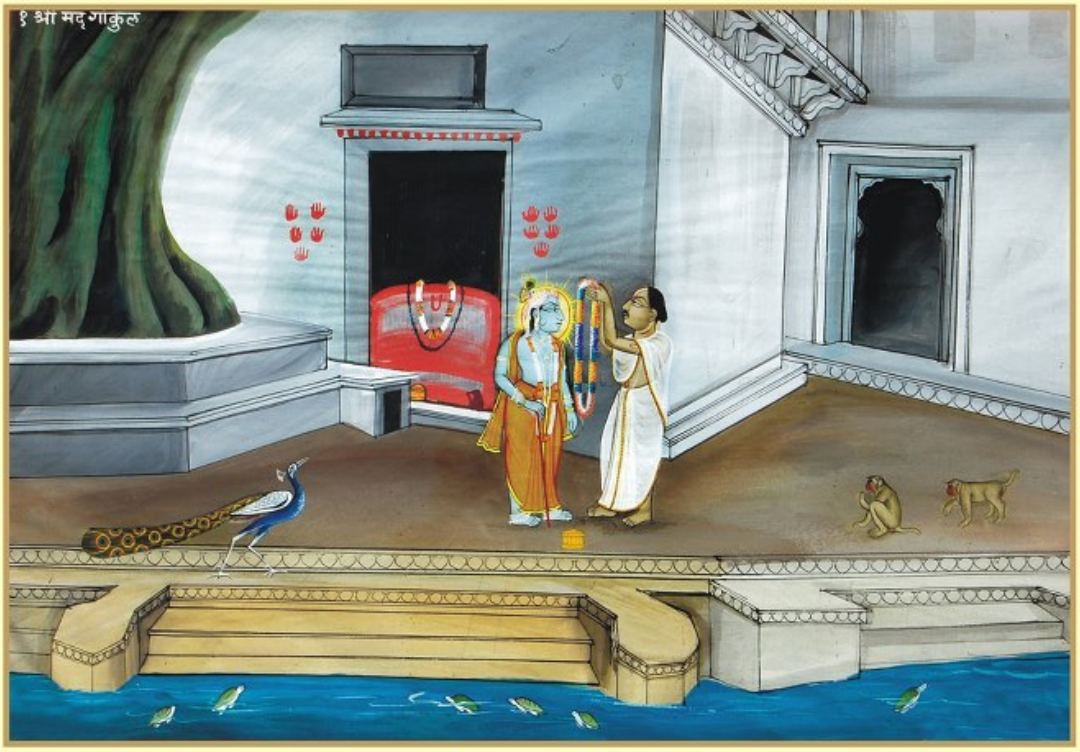

बैठक–1

गोविन्दघाटःश्रीमद् गोकुल

यहां पर श्रावण शुक्ल 11 की अर्ध रात्रि में प्रभुजी को दैवी जीवों के उद्धारार्थ ब्रह्म सम्बन्धकी आज्ञा की है। " ब्रह्म सम्बन्ध करणात् सर्वेषां देह जीवयोः"। श्री महाप्रभुजी ने श्रीजी को पवित्रा धरा कर मिश्री भोग धराया है, श्री की आज्ञानुसार सर्व प्रथम ब्रह्म सम्बन्ध प.भ. दामोदरदासजी हरसानी को हुआ है। श्री यमुना तट पर छोंकर वृक्ष के नीचे प्रभु श्रीवल्लभ विराजित है।

बैठक–2

बड़ी बैठकः श्रीमद् गोकुल

यहां श्री महा प्रभुजी का नित्य वचनामृत करने का स्थल है। परम भक्त श्यामानन्दजी को यहां छोंकर वृक्ष पर श्री शालिग्रामजी के अनेक बटुबे आपश्री ने दिखाये थे।

बैठक–3

शय्या मंदिर; श्रीमद् गोकुल

तपस्यारत योगेश्वर ने गोकुल फिर से बसने और सात मंदिर निर्मित होने विषयक भविष्यवाणी की थी। शय्या मंदिर श्री द्वारिकानाथजी के मंदिर का ही एक भाग है, यहा वंल्लभ प्रभु शयन करते थे।

बैठक–4

बंशीवट; वृन्दावन

वृन्दावन बिहारी श्यामसुन्दर के चरण स्पर्श से पुनीत हुए वृन्दावन का दिव्य स्वरुप श्री महा प्रभुजी ने यहां प.भ. प्रभुदास जलोटा को दिखलाया था। " वृक्षे वृक्षे वेणुधारी, पत्रे पत्रे चतुर्भुज" इसी स्थल पर प.भ. गोपालदासजी गोड़िया को आचार्य चरण ने श्री शालिग्रामजी के स्वरुप में ही श्री राधारमणजी के दर्शन कराये थे।

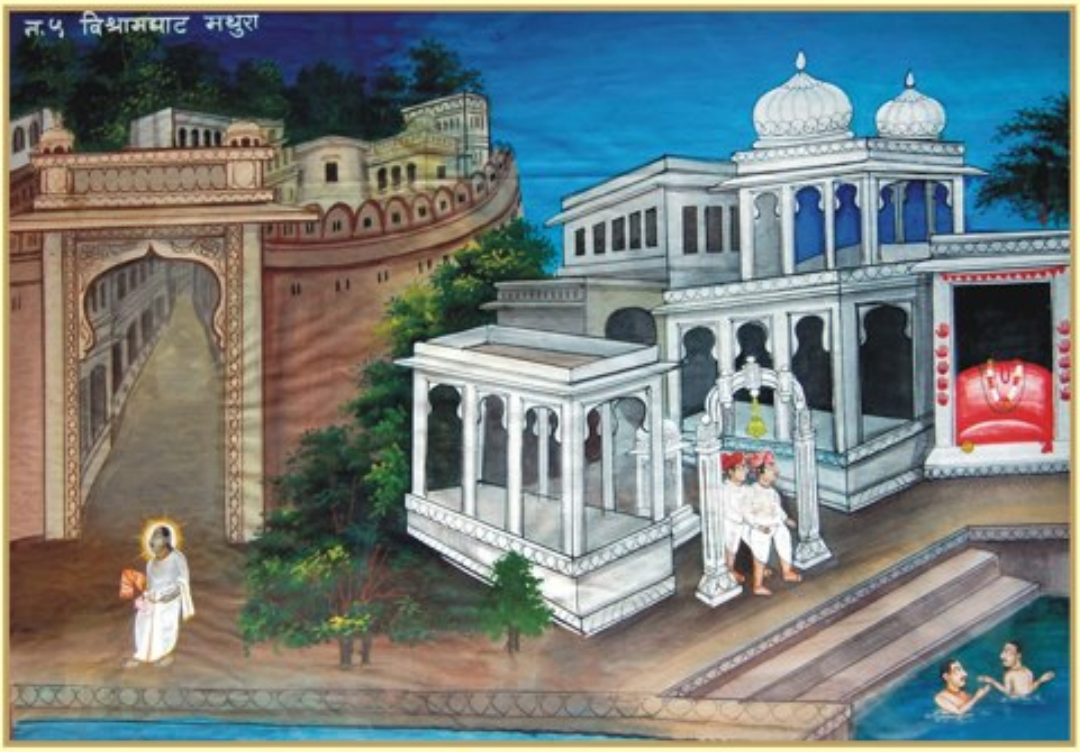

बैठक–5

विश्रान्त घाट; मथुरा

' भुवं भुवन पावनी' श्री यमुनाजी के तट पर यहां आचार्य श्री ने मद् भागवत सप्ताह किया, और 'म्लेच्छ–यंत्र' का परा भव कर श्री उजागर चौबे के पौरोहितत्व में स.1549 भाद्रपद कृष्ण 12 के शुभ दिन व्रजयात्रा हेतु प्रस्थित होकर आपश्री मधुवन पधारे थे।

बैठक–6

श्री मधुवन

कदम्ब वृक्ष के नीचे बिराजकर यहाँ श्री महाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत पारायण किया था। उस समय श्रीमहाप्रभुजी के साथ 6 वैष्णव थे, जिनके नाम है :– 1 श्री वासुदेवदास छकड़ा 2 श्री यादवेन्द्रदास कुम्भार 3 श्री गोविन्द दुबे 4 श्री माधव भट्ट काश्मीरी 5 श्री सूरदास 6 श्री परमानन्ददास मधुवन में सूर्य कुण्ड है और श्री मधुवनिया ठाकुर जी बिराजते है।

बैठक–7

श्री कमोदवन

श्यामतमाल के नीचे श्रीमहाप्रभुजी ने यहां तीन दिन तक श्रीमद् भागवत पारायण किया है, कमोदवन में स्वरूपात्मक ' कमोदकुण्ड ' है, जहाँ ' कुमुदा ' और ' कुमुदिनी ' सहचारियों ने श्री स्वामिनीजी की आज्ञा से शारदीय पर्व पर कुमोद और कुमुदिनी वन सिद्ध किया था।

बैठक–४

श्री बहुलावन

श्री कृष्णकुण्ड के उत्तर में वटवृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी की बैठक है, यहाँ आचार्यश्री ने श्रीमद् भागवत का पारायण कर गौपूजन का महत्व प्रतिपादित किया था।

बैठक–9

श्री राधाकृष्ण कुण्ड

यह बैठक छोकर वृक्ष के नीचे है, यहाँ युगलवर प्रभु श्रीनाथजी और स्वामिनीजी की दिव्यातिदित्य लीला दिखाई है। यह श्री राधाकृष्ण का नित्य विहार स्थल है, इस कुण्ड के आस–पास अष्ठ सखियों के आठ कुण्ड स्थित है, जिनके नाम है :–

1 चन्द्रभागा कुण्ड 2 चम्पकलता कुण्ड 3 चन्द्रावली कुण्ड 4 ललिता कुण्ड
5 विशाखा कुण्ड 6 बहुला कुण्ड 7 संध्यावली कुण्ड 8 चित्रा कुण्ड

बैठक–10

श्री मानसीगंगा (गोवर्द्धन)

यहां श्रीकृष्ण, चैतन्य और श्री महाप्रभुजी का मिलाप हुआ है, आचार्य श्री ने मानसीगंगा का आधिदैविक स्वरूप वैष्णवों को दर्शाया और श्रीमद् भागवत का पारायण किया था।

बैठक–11

श्री परासोली चन्द्रसरोवर

ब्रज प्रदेश के इस रमणीय स्थल पर छोंकर वृक्ष के नीचे श्री महाप्रभुजी बिराजीत है, यहाँ आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह कर महा भाग्यवान वैष्णवजनों को रसेश श्रीकृष्णचन्द्र प्रभु की रासलीला के दर्शन कराये थे और हरिदास वर्य गिरिराजजी के पांच स्वरूप से दर्शन करवाये थे। यथा :– गौरूप , भूजंगरूप, ग्वालरूप, सिंहरूप और स्थलरूप

बैठक–12

आन्योर

परम भगवतोत्तम श्री सद्दू पाण्डे के घर में यह बैठक है, यहाँ ही प्रभु श्री गोवर्द्धनधर और वागधीश महाप्रभुजी का मिलाप हुआ था। आन्योर में आपश्री ने तीन दिन का पारायण किया था।

बैठक–13

श्री गोविन्द कुण्ड

श्री गोवर्द्धन की तरहटी में गोविन्दकुण्ड पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है, यहाँ पुष्टिमहारसदाता श्री वल्लभमहाप्रभु ने परम भगवदीय श्रीकृष्णदास मेघन को " व्यापीवैकुण्ठ " के दर्शन कराये थे। यहाँ ही श्री चैतन्य महाप्रभु को आपश्री ने " कृष्ण प्रेमामृत " ग्रन्थ प्रदान किया था।

बैठक–14

श्री सुन्दर शिला (जतीपुरा)

श्री गिरिराजजी के मुखारविन्द के सन्मुख छोंकर वृक्ष के नीचे यह बैठक स्थित है, श्री महाप्रभुजी ने यहाँ ही श्री गोवर्द्धन पूजा कर " सवा सेर भात " का अन्नकूट किया था। यहाँ ही प. भ. श्री दामोदरदास हरसानी ने महाप्रभुजी को निंद्रित जानकर श्रीनाथजी को रूकवाने का संकेत दिया था।

बैठक–15

श्री गिरिराज पर (श्रीनाथजी के मन्दिर में)

श्रीजी के शय्या मन्दिर के समीप श्री महाप्रभुजी की बैठक है, यहाँ आपश्री सेवा के अवकाश में बिराजते थे। गोपीवल्लभ भोग में विलम्ब होने पर स्वयं श्री स्वामिनीजी भोग का थाल लेकर पधारी :– श्री दामोदर दास को संकेत दिया, यहाँ श्री महाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत का पारायण किया तथा श्री गिरिराजजी की परिक्रमा की।

बैठक–16

श्री कामवन

श्री कुण्ड पर छोंकर वृक्ष के नीचे महाप्रभुजी बिराजते है, इसी स्थल पर " ब्रह्मपिशाच " को आपश्री ने मुक्ति प्रदान की थी और सुरभिकुण्ड पर निर्भयता का वातावरण निर्मित किया था। कामवन में श्री गोकुलचन्द्रमाजी एवं मदनमोहनजी बिराजते है।

बैठक–17

श्री गहवरवन

यह बैठक बरसाना गहवरवन में कुण्ड के ऊपर है। आपश्री ने यहाँ श्रीमद् भागवत पारायण किया था। मृत अजगर और चींटों के प्रसंग में श्री भागवत गूढार्थ के प्रकाशक श्रीमहाप्रभुजी ने यह उपदेश दिया था कि " संत महंतों को धर्म को जीवित रखना चाहिये, न कि स्वयं धर्म पर जीवित रहे। "

बैठक–18

श्री संकेतवट

कृष्ण कुण्ड के ऊपर छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आपश्री ने श्रीमद् भागवत पारायण किया था, यहाँ संकेत देवी का मन्दिर है। यहाँ की हरित वनराषि और सुन्दर पक्षियों का कलरव मन को आकर्शित करता है।

बैठक–19

श्री नन्दगाँव

नन्दगाँव श्री नन्दरायजी का वासस्थल है, पान सरोवर पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आचार्य श्री छः मास बिराजे थे। यहाँ भी श्रीमहाप्रभुजी ने भागवत पारायण किया था। घोड़े की मुक्ति वाला प्रसंग यहीं का है।

बैठक–20

श्री कोकिलावन

यहाँ श्रीकृश्ण कुण्ड पर छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है, श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के श्री चतुरानागा और उनके साथ एक हज़ार नागा साधुओं को आपश्री के द्वारा खीर का भोजन करवाया गया। आपश्री की दृश्टि से थोड़ी खीर अक्षय स्वरूप में परिवर्तित हुई थी। यहाँ प्रसाद की महत्ता दिखाई गई है।

बैठक–21

श्री भाण्डीर वन

अदेयदानदक्ष श्रीमहाप्रभुजी ने यहाँ श्रीमद् भागवत पारायण किया था और श्री माध्व सम्प्रदाय के स्वामी व्यासतीर्थजी को त्याग की महत्ता बतलाते हुए लक्षावधि सम्पत्ति का त्याग किया था।

बैठक–22

श्री मानसरोवर

ललित ब्रज देश स्थित मानसरोवर पर श्रीमहाप्रभुजी तीन दिन बिराजे। परम भगवदीय श्री दामोदरदास हरसानी प्रभृति महानुभावों को आपश्री ने पुरूषोत्तम कान्ति स्वरूप से दर्शन दिये थे। यहां से ही आचार्यश्री जन्माष्टमी उत्सव मनाने हेतु श्री गोकुल पधारे और नन्दमहोत्सव के दिन प्रभुश्री नवनीत प्रियजी को वृक्ष में पिताम्बर चादर बांधकर पलना झूलाये थे।

बैठक–23

श्री सूकरक्षेत्र सोरों

सोंरं घाट पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। परम भगवदीय श्रीकृष्णदास मेघन ने यहां ही अपने उपदेष्टा गुरू को आचार्यश्री के पूर्ण पुरूषोत्तमत्व सिद्ध करने के लिए एक मुहुर्त तक प्रज्वलित अग्नि अंजुली में रखी थी। सोरों में ही सिद्धी प्राप्त श्री केशवपुरीजी को आपश्री ने गंगा में डूबने से बचाये थे।

बैठक–24

श्री चित्रकूट

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के श्रीचरणों से पवित्र हुए इस दिव्य धाम में कान्तानाथ पर्वत के समीप श्रीमहाप्रभुजी बिराजे थे। यहां आपश्री ने भागवत पारायणोंपरान्त "रामायण" का पाठ किया था और " सेतू बन्धन मात्रेक चरितं हरि संमंतं। दोषा भावाय नारीणां लंका स्थाने निरूपितमं ।। " इस श्लोक की कारिका कही थी। कान्तानाथ पर्वत श्री गिरिराजजी के भाई है।

बैठक–25

श्री अयोध्या

मोक्षदायिनी अयोध्यापुरी में सरयू तट पर श्रीमहाप्रभुजी बिराजे थे। यहां आचार्यश्री ने भगवद्वदनानलावतार स्वरूप से निज जनों को दर्शन दिये थे। अयोध्या भगवान रागवेन्द्र की जन्मभूमि है।

बैठक–26

श्री नैमिषारण्य

अट्ठासी हज़ार सोनकादि ऋषिश्वरों की साधना स्थली नैमिषारण्य में गोविन्द कुण्ड पर छोंकर वृक्ष के नीचे आपश्री बिराजे है। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत प्रथम स्कन्द के पांचवे अध्याय के बारहवें अध्याय के बाहरवें श्लोक :–

"अध्यात्मयोगेन विविक्तसेवया, प्राणेन्द्रियात्मा विजयेन सघ्रयक ।
सच्छद्धया ब्रह्मचर्येण, शश्रवदसंप्रमादेन यमेन वाचा।।"

की कारिका कही थी।

बैठक–27

श्री काशी वाराणसी

वैष्णवाग्रगण्य विश्वनाथ की नगरी काशी में सेठ पुरूषोत्तम दास के घर में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आपश्री ने यहां ही " नन्दमहोत्सव " प्रथम प्रकट किया है " पत्रावलम्बन" के ग्रन्थ के प्रणयन पर " सत्यं सत्यंच सत्यं श्रीवल्लभोदितम्।" की ध्वनि श्री विश्वेश्वर के मन्दिर में से गूंजी थी।

बैठक–28

श्री हनुमानघाट, काशी

हरिचरण विहारिणी श्रीगंगाजी के तट पर श्रीमहाप्रभुजी ने "सन्यास" ग्रहण किया था। आपश्री ने स्वात्मज श्री गोपीनाथजी तथा श्री विट्ठलनाथजी के शिक्षार्थ साढे तीन श्लोक :– " यदा बहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन,
सेव्यः स एव गोपीशोविधास्यत्यखिलंहिनः।।"

भूमि पर लिखकर प्रभु श्रीनाथजी की सेवा से बहिर्मुख न होने सम्बन्ध में अन्तिम आज्ञा दी थी। 40 दिन तक निराहार रहकर आषाढ़ शुक्ल 2 संवत 1587 को अभिजितकाल में सदेह श्रीगंगाजी के प्रवाह में से प्रदीप्त अग्निपुंज में विलीन होकर स्वधाम पधारे थे।

बैठक–29

श्री हरिहर क्षेत्र

यहां गंगा और गल्लकी के समीप प. भ. भगवानदासजी के घर में यज्ञपुरूष श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आसुरव्या मोहलीला के पश्चात् दैवी जीवों को आप श्री यहां नित्य अखण्ड प्रकट दर्शन देते है। श्रीमहाप्रभुजी की चरण पादुआएं बिराजित है।

बैठक–30

श्री जनकपुर

जनकसुता जगजननी श्री जानकी जी की जन्मभूमि में माणक तालाब के उपर प. भ. श्री भगवानदासजी के बाग में श्रीमहा प्रभुजी बिराजतें हैं। आपश्री ने यहां श्रीमद् भागवत सप्ताह की और श्री विष्णु स्वामी सम्प्रदाय की महाभाग श्री केवलरामजी नागा को "नाग निवेदन" कराया था।

बैठक–31

श्री गंगासागर

मुनिवर्य श्री कपिलदेवजी तपोभूमि में कपिलकुण्ड पर छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहां 6 मास तक श्रीमहाप्रभुजी बिराजे और श्रीमद् भागवत के तृतीय स्कन्द की सुबोधिनी आपश्री ने यहां पूर्ण की थी। गंगासागर में तामसी जीवों का पाप क्षय कर आपश्री ने भक्ति का दान दिया है।

बैठक–32

आचार्य श्री वल्लभ का प्राकट्य स्थल चम्पारण्य

प्रातःस्मर्णीय श्री यज्ञनारायण भट्ट से लेकर श्री लक्ष्मण भट्ट तक 100 सोमयज्ञ पूर्ण होने पर इस अनुपम पावन पुनीत स्थल पर अग्निकुण्ड में से वैशाख कृष्ण एकादशी विक्रमाब्द 1535 को विभुवदन वैश्नारावतार श्रीमहाप्रभुजी का प्राकट्य हुआ है, इस मंजु मनोहर अरण्य में महानद और श्री चम्पेश्वर महादेव बिराजित है।

बैठक–33

श्री छटीघर, चम्पारण्य

श्रीमहाप्रभुजी के जन्म के अनन्तर यहां चम्पे के वृक्ष के नीचे श्रीलक्ष्मण भट्टजी और श्रीमती इलम्मागारूजी ने " छटी पूजन " किया है। परम भगवतोत्तम श्रीमाधवानन्द ब्रह्मचारी और श्री मुकुन्ददास सन्यासी को " वस्तुतः कृष्ण एव " श्रीमहाप्रभुजी ने ब्रजलीला के दर्शन यहां कराये थे।

बैठक–34

श्री जगन्नाथपुरी

श्री जगदीश भगवान के मन्दिर में दक्षिण दरवाज़े के पास श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आचार्य चरण यहां एक वर्ष तक बिराजे। इस पुरूषोत्तम क्षेत्र के राजा को श्री जगन्नाथरायजी ने लिखित रूप में यह आज्ञा प्रदान की थी :–

" एकं शास्त्रं देवकी पुत्र गीतं, एको देवो देवकी पुत्र एव।
मन्त्रोऽप्ये कं तस्य नामानि यानि, कामाप्ये कं तस्य देवस्य सेवा।।"

बैठक–35

श्री पंढरपुर

भक्त प्रवर श्री पुण्डरीक की महिमा से मंडित पंढरपुर में भीमरथी नदी के तट पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। प्रभु श्री विट्ठलनाथजी को आपश्री ने मिश्री भोग धराकर अबीर से खिलाये हैं और " कनकाभिषेक " अवसर पर प्राप्त सप्त स्वर्ण मुद्राओं से श्री चरणों के नूपुर सिद्ध करवा ।

बैठक–36

नासिक

इस स्थान के पास त्रयम्बक से गोदावरी नदी निकलती है, यहां श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी आश्रम बनाकर बिराजे थे। उसी पंचवटी में गोदावरी नदी के घाट के समीप श्रीमहाप्रभुजी की बैठक स्थित है। यहां भक्तिमार्ग की स्थापना और तुलसीमाला का धारण करने का महत्व आपश्री ने प्रतिपादित किया था। नासिक से श्रीमहाप्रभुजी ने अपनी दक्षिण भारत की पदयात्रा आरम्भ की थी।

बैठक–37

श्री पनानृसिंह – दक्षिण भारत

भगवान नृसिंहजी के मन्दिर के समीप छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक स्थित है। भक्त भय भंजन श्री पनानृसिंह भगवान को शीतल भोग धराकर आपश्री ने यहां श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

बैठक–38

श्री लक्ष्मण बालाजी

श्रीलक्ष्मणबालाजी के अति प्रसिद्ध देवालय के समीप छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। प्रभु श्रीलक्ष्मणबालाजी को आपश्री ने मनोहर की सामग्री अरोगाई थी। श्रीमहाप्रभुजी ने यहां श्रीमद् भागवत सप्ताह किया था।

बैठक–39

श्रीरंगजी

भगवान श्रीरंगनाथजी के इस महिमा मय धाम में कावेरी नदी के किनारे छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। रस स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीरंगजी को श्रृंगार धराकर भोग समर्पित किया है और श्रीमद् भागवत का सप्ताह पारायण कर यहां पुष्टि भक्ति का रसवर्षण किया है।

बैठक–40

श्रीविष्णु कान्ची

धर्मप्राण भारत देश के प्राचीन तीर्थों में से एक श्रीविष्णु कान्ची में भगवान श्रीवरदराज स्वामी के मंदिर के समीप श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। श्रीवरदराज स्वामी को " ढोंकला "की सामग्री अरोगाई है। देवालय की 24 सीढ़ियों पर " 24 अष्ट पदियां " परम भागवत श्रीजयदेवजी ने प्रभु सेवा में लिखकर अर्पित की थी।

बैठक–41

श्री सेतुबन्ध, रामेश्वर

निखिल विश्वविद्यायिका श्रीसीताजी द्वारा निर्मित तथा प्रभु श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा स्थापित भगवान रामेश्वर के इस पावन तीर्थ में छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहां आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। कृपार्णव आचार्यश्री ने यहां के तीर्थ क्षेत्र में विधिवत् स्नान किया है।

बैठक–42

श्री मलयाचल पर्वत

श्री मलयाचल पर्वत पर चन्दन वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी बिराजित है। यहां श्री हेमगोपालजी ठाकुरजी का मन्दिर है, श्रीमहाप्रभुजी ने प्रभु के श्रीअंग में अरगजा समर्पित कर कदली फल और नारिकेल सिद्ध करके भोग धराये हैं। देवराज इन्द्र यहां दर्शन हेतु उपस्थित हुए थे। आपश्री ने यहां श्रीमद् भागवत का पारायण किया था।

बैठक–43

श्रीलोहगढ़, गोआ

लोहगढ़ के रमणीय वन के मध्य में आपश्री के बैठक है। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है, समीप ही गंधर्व कुण्ड और प्राचीन शिला स्थित है।लोहगढ़ में वागधीश श्रीमहाप्रभुजी ने अनेक जीवों को शरण लिये हैं।

बैठक–44

श्री ताम्रपर्णी

श्री ताम्रपर्णी नदी के तट पर द्विजवर रूप प्रकट पुरूषोत्तम श्रीवल्लभाचार्य चरण यहां छोंकर वृक्ष के नीचे बिराजित है। ताम्रपर्णी के तट पर तीन दिन तक आपश्री ने " गायत्री " का जप किया था और यहां के राजा तथा विप्रजनों को अभयत्व प्रदान किया था।

बैठक–45

श्रीकृष्णानदी के तट पर

मायावाद निराकृत रूप श्रीमहाप्रभुजी कृष्णा नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे बिराजे हैं। यहां आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह कर मायावादियों को शरण लिये हैं और " शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद " का प्रतिपादन किया है।

बैठक–46

श्रीपंपासरोवर

पंपा सरोवर पर वट वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। श्रीरामावतार के समय से बैठे हुए पक्षी का परमभगवदीय श्रीकृष्णदास मेघन के द्वारा आचार्यश्री के चरणोदक से यहां उद्धार हुआ है।

बैठक–47

श्रीपदम्नाभजी

इस तीर्थ में छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी बिराजित है। बड़भागी श्रीदामोदरदासजी हरसानी को आचार्यप्रवर ने श्रीपद्मनाभ भगवान के स्वरूप का दर्शन यहां कराया है।

बैठक–48

श्री जनार्दनजी

श्री जनार्दन क्षेत्र में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक कुण्ड के पास छोंकर वृक्ष के नीचे स्थित है। आपश्री ने श्री जनार्दन भगवान को श्रृंगार धराकर भोग धराया है। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह कर " भक्तिमार्ग " का स्थापन किया है।

गीता स्टूडियो

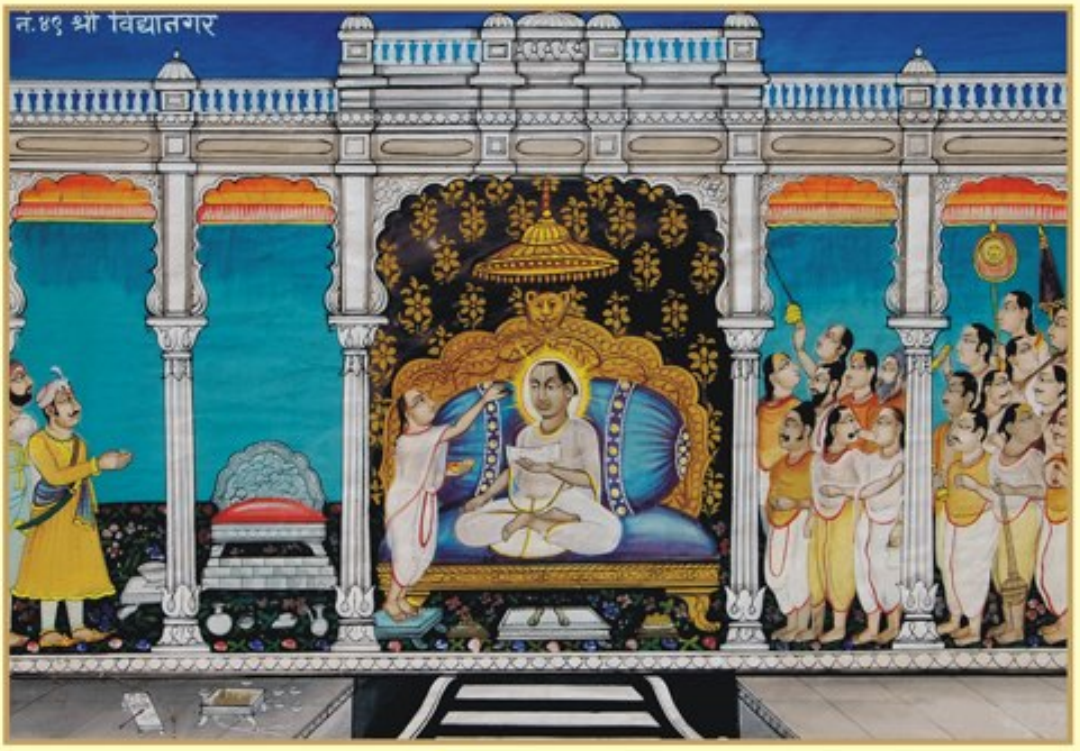

बैठक–49

श्री विद्यानगर

विद्यानगर में राजा कृष्णदेवराय की ऐतिहासिक " धर्मसभा " में भक्तिमार्गाब्ज मार्तण्ड श्री वल्लभ प्रभु ने विजय प्राप्त की थी। आपश्री का यहां " कनकाभिषेक " हुआ था और निम्नांकित विरूदावली सेवार्पित की गई थी :– " श्री वेदव्यास विष्णु स्वामी सम्प्रदाय समुद्धार सम्भृत श्री पुरूषोत्तम वदनावतार सर्वाम्नायसंचार वैष्णवानाय प्राचुर्यकार श्रीबिल्वमंगलाचार्य साम्प्रदायिकार्पित सम्राजासनाखण्ड भूमण्डलाचार्य जगद्गुरू महाप्रभुः।"

बैठक–50

श्रीत्रिलोकभानजी

तत्वसूत्र भाष्य प्रदर्शक श्रीमहाप्रभुजी यहां छोंकर वृक्ष के नीचे बिराजित है। श्रीत्रिलोकभानजी ठाकुरजी की आचार्यश्री ने सेवा की है और श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

गीता स्टूडियो

बैठक–51

श्री तोताद्री पर्वत

तोताद्री पर्वत पर वट वृक्ष के नीचे भक्त सेवित श्रीमहाप्रभुजी बिराजित है। समीप ही कदम्ब वृक्ष के नीचे " वल्लभ कुण्ड " है, जिसे आचार्यश्री ने प्र0 भ0 श्रीकृष्णदासजी मेघन को आज्ञा कर प्रकट कराया है।

बैठक–52

श्री दरबसेनजी

यह बैठक अति विकट स्थल पर है, जहां सिंह, व्याघ्र, एवं सर्प आदि जीवों का बाहुल्य है। महाकारूणिक श्रीवल्लभ महाप्रभु ने यहां बिराजकर श्रीमद् भागवत सप्ताह किया था। श्री ठाकुरजी ने आपश्री को यह आज्ञा दी थी कि :–

'' आपके वंश में सब ही पुरूषोत्तम होएंगे।''

बैठक–53

श्री सूरत

सूर्य तनया श्री ताप्ती जी के किनारे अश्विनीकुमार आश्रम के पास सर्वलक्षण सम्पन्न श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहां आपश्री के श्रीमद् भागवत पारायण के समय श्री ताप्तीजी स्वंय उपस्थित रहकर सेवा करती थीं।

गीता स्टूडियो

बैठक–54

श्री भरूच

भृगु क्षेत्र में परम पवित्र श्रीनर्मदाजी के किनारे पर छोंकर वृक्ष के नीचे त्रिलोकीभूषण आचार्यश्री वल्लभ महाप्रभु बिराजित है। यहां आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

बैठक–55

श्री मोरबी

महाराज मयूरध्वज की नगरी मोरबी में कुण्ड के उपर छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमदाचार्य चरण की बैठक है।अदेय दान दक्ष श्रीमहाप्रभुजी ने प्र0 भ0 श्रीबाला और बादा बन्धुओं को शरण में लिए है और श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

बैठक–56

श्री नवानगर

नागमती नदी के तीर पर छोंकर वृक्ष के नीचे पूर्ण काम आचार्य श्रीवल्लभ महाप्रभु की बैठक है। नवानगर के राजा " जामतमांची " को आपश्री ने शरण लेकर निर्भीकता पूर्वक राज्य संचालन हेतु आशीर्वाद प्रदान किया है।

बैठक–57

श्री खम्भालिया

महाकारूणिक श्रीमहाप्रभुजी यहां कुण्ड के उपर छोंकर वृक्ष के नीचे बिराजित है। प0 भ0 श्रीकृष्णदासजी मेघन ने आपश्री के चरणोदक से प्रेत की मुक्ति की है। भगवदीयों की यह वाणी मननीय है :–

" चरणोदक लेत प्रेत ततक्षण तें मुक्त भये।
करूणामय नाथ सदा आनन्द निधि कंदे ।।"

बैठक–58

श्री पिण्डतारक

दुर्वासा ऋषि के वासस्थल पिण्डतारक में छोंकर वृक्ष के नीचे परम उदार श्रीमहाप्रभुजी बिराजित है। यहां श्रीवल्लभ प्रभु ने श्रीमद् भागवत पारायण किया है और तीर्थ पुरोहित को यह आशीर्वाद दिया है कि :–

''जाकीतूं पीठिका पे हाथ धरेगो, ताके हाथ सों पिण्ड तरेगें।''

बैठक–59

श्री मूलगोमती

पुण्यसलिला गोमती नदी के किनारे छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है।

श्री गोमतीजी जलरूप में वैकुण्ड से द्वारिका पधारीं हैं। यहां श्री विष्णुस्वामी मत के एक सन्यासी को आपश्री ने नाम निवेदन कराया है।

बैठक–60

श्री द्वारिका

ब्रजप्रिय श्रीमहाप्रभुजी द्वारिकापुरी में गोमतीजी के किनारे छोंकर वृक्ष के नीचे बिराजित है। यहां आपश्री ने चातुर्मास किया है, श्री द्वारिकानाथजी की सेवा के अनन्तर श्रीसुबोधिनीजी के " फल प्रकरण " की कथा कही है।

बैठक–61

श्री गोपी तलैया

परम भावात्मक गोपी तलैया, जहां प्रभु श्री द्वारिकानाथजी ने वेणुवादन द्वारा ब्रज देश से महाभाग कुमारिकाओं के यूथ को पधराकर " रास " किया था। श्रीमहाप्रभुजी छोंकर वृक्ष के नीचे बिराजित है। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

बैठक–62

श्री शंखोद्धार

शंखासुर दैत्य का वध करके श्रीपभु ने इस स्थल पर शंख प्राप्त किया है। यहां श्री शंखनारायणजी ठाकुरजी बिराजते हैं। श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह की थी और श्रीमद् भागवतान्तर्गत " वेणुगीत " का प्रकरण सुनाया था।

बैठक–63

श्रीनारायण सरोवर

श्री मार्कण्डेय आश्रम के समीप छोंकर वृक्ष के नीचे आचार्यश्री बिराजित है। नारायण सरोवर में से श्रीआदिनारायण भगवान चतुर्भुज स्वरूप प्रकटे हैं। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है और प्र0 भ0 दामोदरदास हरसानी को यह बतलाया है कि " सरस्वती का उल्लंघन हम कभी नहीं करेंगे क्यूंकि सरस्वती भगवतवाणी का प्रवाह रूप है। "

बैठक–64

श्री जूनागढ़

गरनार पर्वत पर रेवती कुण्ड के किनारे छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहां आचार्यश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। दामोदर कुण्ड में स्नान करते समय आपश्री को भगवत स्वरूप प्राप्त हुए थे। सम्प्रति श्रीदामोदरजी के नाम से जूनागढ़ में बिराजित हैं।

बैठक–65

श्री प्रभास क्षेत्र

प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र के देहोत्सर्ग क्षेत्र में छोंकर वृक्ष तले गुफा में श्रीमहाप्रभुजी बिराजित हैं। आचार्यश्री ने यहां श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण किया है और प्रभास क्षेत्र की पंच तीर्थी परिक्रमा की है।

बैठक–66
श्रीमाधवपुर

यहां कदम्ब कुण्ड पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताप पारायण किया है और ठाकुरजी श्रीमाधवरायजी की सेवा का प्रकार प्रारम्भ किया है। माधवपुर में श्रीरूक्मिणीजी से श्रीठाकुरजी का विवाह हुआ है।

बैठक–67

श्री गुप्तप्रयाग

प्रयाग कुण्ड के उपर छोंकर वृक्ष के नीचे कृष्णानन द्विजरूप में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहां एक विप्र को अगले जन्म में प0 भ0 श्रीगोपीनाथदास ग्वाल के रूप में अवतरित होने की आज्ञा आपश्री ने की है। श्रीगोपीनाथदास ग्वाल ने श्रीनाथजी की गायों की बहुत सावधानी पूर्वक सेवा की है।

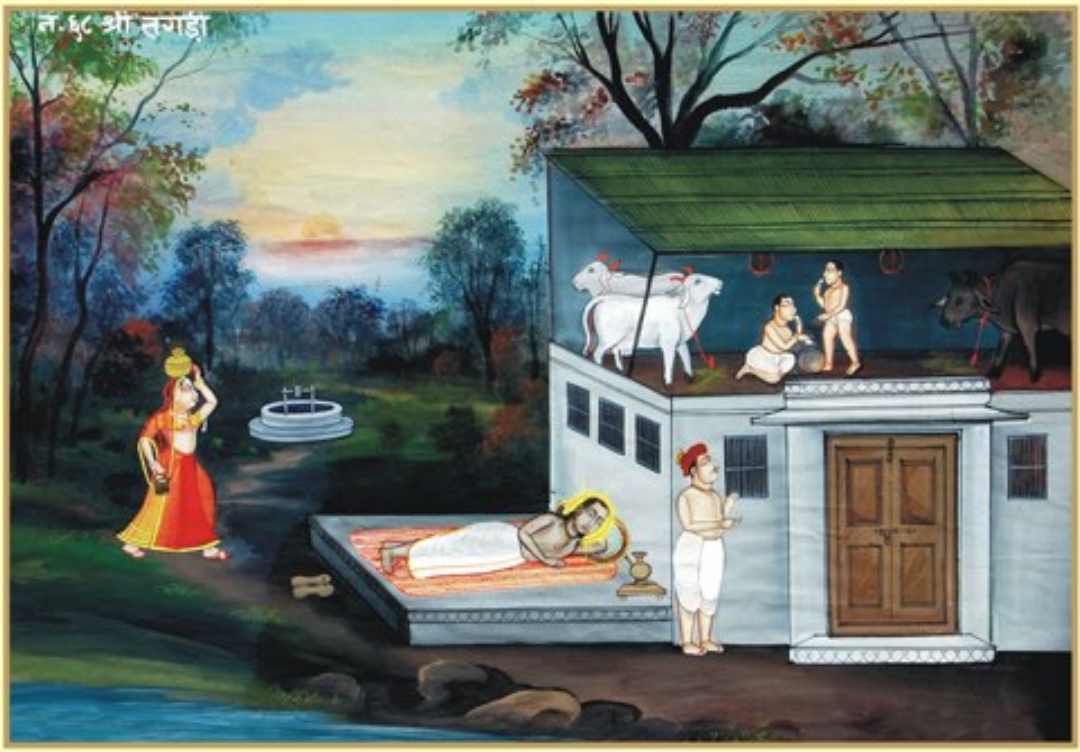

बैठक–68

श्री तगड़ी

कृपासिन्धु श्रीमहाप्रभुजी यहां एक भाग्यवान ब्राह्मण के घर के आगे एक चबूतरे पर बिराजे हैं। गृहस्वामी को अपने पुत्र द्वय में प्रभु श्रीकृष्ण और बलदाऊ का स्नेह प्रकट होने पर आपश्री ने अलौकिक लीला के दर्शन करवाये हैं। तगड़ी में श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है।

बैठक–69

श्री नरोड़ा

परम भगवतोत्तम श्रीगोपालदासजी के घर में श्रीमहाप्रभुजी बिराजित है। यहां श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत किया है और श्रीगोपालदासजी को स्वरूपानन्द का साक्षात अनुभव कराया है।

बैठक–70

श्री गोधरा

षड़शास्त्र पारंगत प0 भ0 श्रीराणाव्यास के घर में श्रीमहाप्रभुजी विराजित है। यहां आपश्री ने " वेणुगीत " की सुबोधिनी कही है। काशी की विद्वत्सभा में पराजित होने पर व्यासजी जब गंगा में आत्महत्या करने जा रहे थे तब आचार्यश्री ने उन्हें ज्ञान देकर " चतुःश्लोकी " ग्रंथ पढ़ा कर पुनः विजयश्री दिलाई थी।

बैठक–71

श्री खेरालू

परम भगवदीय श्री जगन्नाथ जोशी के घर में श्रीवल्लभ महाप्रभु बिराजित हैं। यहाँ श्रीमद् आचार्य चरण ने " युगलगीत " के एक श्लोक पर तीन प्रहर तक वचनामृत कर रस वर्षण किया है।

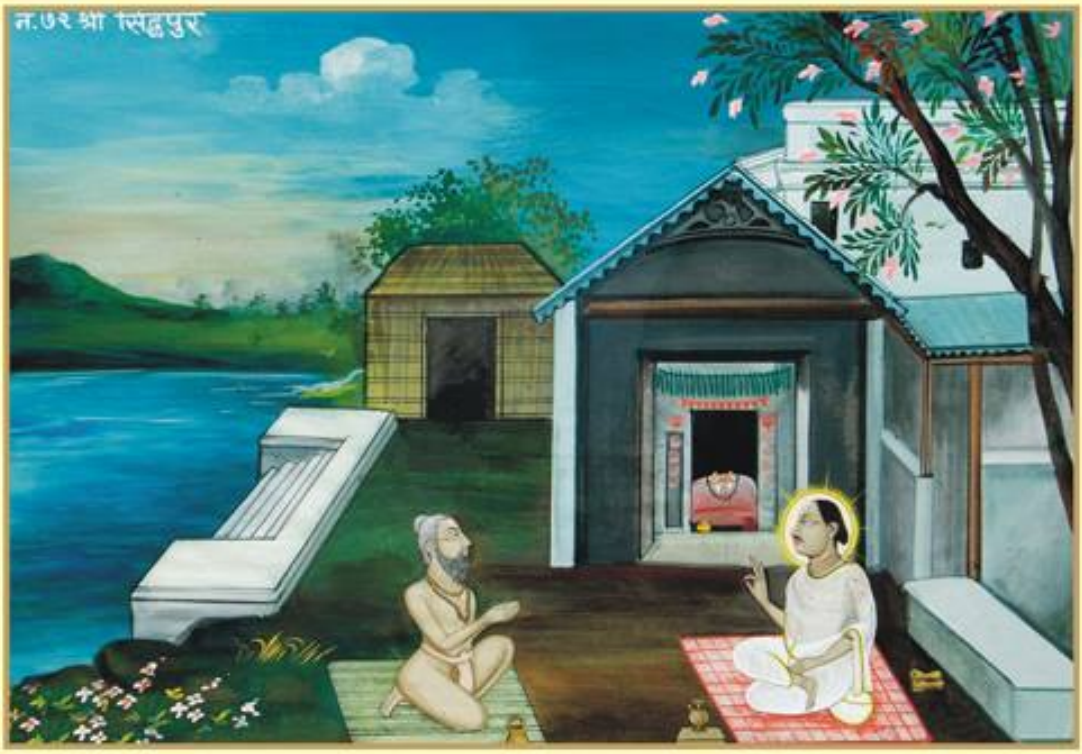

बैठक–72
श्री सिद्धपुर

परम भागवत श्री कपिलदेवजी की माता देवहुतिजी को यहाँ " सांख्य योग " का उपदेश किया है। सिद्धपुर में श्री कर्दम ऋषि का आश्रम है और बिन्दू सरोवर भी है।

श्री भागवत प्रतिपद मणिवर भावभूषिता मूर्ति श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीमद् भागवत सप्ताह कर " ब्रह्मवाद " की स्थापना की है।

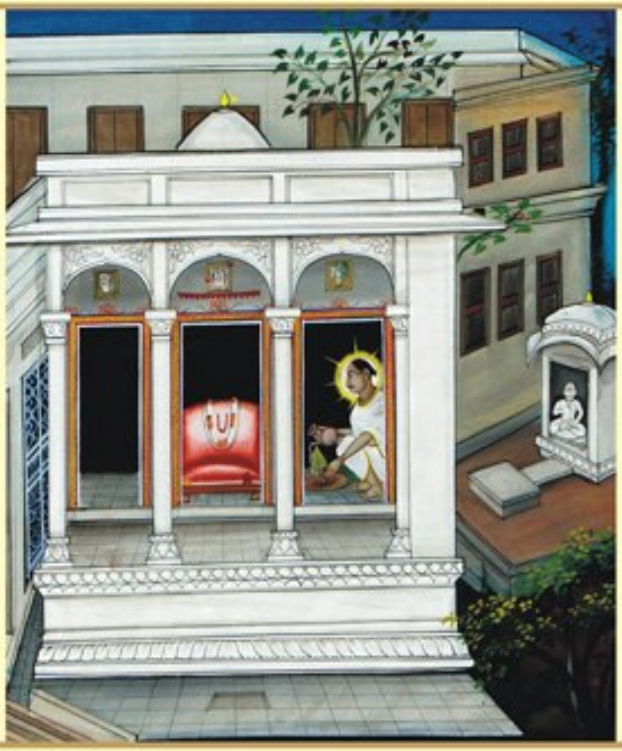

बैठक–73
श्री अवन्तिकापुरी (उज्जैन)

तीर्थश्रेष्ठ अवन्तिकापुरी में प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र की विद्या भूमि अंकपात स्थित गोमती कुण्ड के समीप पीपल वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक विद्यमान है।

परम भगवदीय श्रीदामोदरदास हरसानी आपश्री के साथ यहाँ रहे हैं। भगवान महाकाल की इस नगरी में वैष्णव धर्म के पुनर्स्थापना स्वरूप " पीपलवृक्ष " का रोपण मायावाद निराकर्ता श्रीमहाप्रभुजी ने यहाँ किया है।

बैठक–74
श्री पुष्करजी

" माता गंगा समंतीर्थ पिता पुष्कर मे वच।" पुराणोक्त भावनाओं से संयुक्त श्रीपुष्करजी में वल्लभ घाट पर छोंकर वृक्ष के नीचे श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आपश्री ने यहाँ श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। पुष्करजी में श्रीब्रह्माजी का मन्दिर है।

बैठक–75

श्री कुरूक्षेत्र

धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र में जहाँ अखिल लोक महेश्वर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने अर्जुन को गीतामृत का पान कराकर विराट स्वरूप से दर्शन दिये थे। श्रीमहाप्रभुजी की बैठक कुण्ड के ऊपर है। आचार्यश्री ने यहाँ श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। " युगलगीत " के प्रसंग में अनिर्वचनीच रसावेश हुआ है।

बैठक–76

श्री हरिद्वार

श्री गंगाजी के तट पर वरद भूमि कनखल क्षेत्र में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ संवत् 1576 में " कुंभपर्व " के अवसर पर आपश्री का पदार्पण हुआ था, " हर की पेढ़ी "पर बिराजकर आचार्यश्री ने " पंचाक्षर " जप किया था और पर्वकाल में ब्रह्म मुहूर्त के समय गंगा स्नान किया था।

बैठक–77
श्री बद्रिकाश्रम

नगाधिराज हिमालय के अंचल में स्थित श्री बद्रीनाथ धाम में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। इस तपोभूमि में आपश्री बिराजे वह दिन " वामन द्वादशी " का था, फलाहार उपलब्ध नहीं होने पर स्वयं भगवान श्री बद्रीनाथजी ने " उत्सवान्ते च पारणम् " की व्यवस्था दी है।

बैठक–78

श्री केदारनाथ

ज्योतिर्लिंग श्री केदारनाथ की बस्ती में केदार कुण्ड पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। आनन्द मूर्ति श्रीमहाप्रभुजी ने यहाँ श्रीमद् भागवत पारायण किया है। कथा श्रवण करने हेतु नित्य योगेश्वर के स्वरूप में श्री केदारनाथ पधारते थे।

बैठक–79

श्री व्यासाश्रम

पवित्रतम हिमालय खंड में श्री वेदव्यासजी के आश्रम में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ " भ्रमरगीत " के एक श्लोक पर आपश्री ने 72 घंटे तक वचनामृत किया था। श्रीकृष्णदास मेघन को व्यास गुफा के बाहर खड़े रहने का निर्देश देकर आचार्यश्री अकेले व्यासजी से मिलने पधारे। लौटने पर कृष्णदासजी को अपने स्थान पर अविचल खड़े देख श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न हुए थे।

बैठक–80

श्री हिमालय पर्वत

हिमाच्छादित गिरि श्रृंग और पावन प्रकृति के मध्य परमानन्द स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी बिराजित हैं। यहाँ आपश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। परम भगवदीय श्रीकृष्णदास मेघन उत्तराखण्ड की पदयात्रा में आपश्री के साथ थे।

बैठक–81

श्री व्यास गंगा

श्री वेदव्यासजी के जन्म स्थान व्यासगंगा के तट पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक छोंकर वृक्ष के नीचे है। सघन वृक्षावली की कुंज में आचार्यश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। श्रीगंगाजी आधिदैविक स्वरूप से स्वयं कथा श्रवण करने को पधारती थीं।

बैठक–82

श्री मन्दराचल पर्वत

छोंकर वृक्ष के नीचे पार्वत्य स्थल पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यहाँ आचार्यश्री ने श्रीमद् भागवत सप्ताह किया है। यहाँ बिराजित श्री मधुसूदन ठाकुरजी की सेवा आपश्री ने की है। प्रभु श्री गोवर्द्धन धरण की आज्ञा से आचार्यश्री यहाँ से काशी प्रस्थित हुए हैं।

गीता स्टूडियों, नाथद्वारा

बैठक–83

श्री अडेल

अडेल में श्रीमहाप्रभुजी स्थायीरूप से बिराजे हैं। यहाँ आपश्री के मातृचरण इलम्मागारूजी को स्वयं श्रीनवनीतप्रियजी ने ब्रह्म–सम्बन्ध कराया है। लालन को भेंट स्वरूप माताजी ने मोती की माला अर्पित की थी।

(यह माला आज भी नाथद्वारा में श्रीनवनीतप्रियजी को धराते हैं।)

गीता स्टूडियों, नाथद्वारा

बैठक–84

श्री चरणाट

प्रभु श्रीनाथजी की आज्ञा पाकर अडेल से श्रीमहाप्रभुजी, श्रीमहालक्ष्मीजी (श्री अक्काजी) श्रीदामोदरदासजी हरसानी, श्रीपद्मनाभदासजी तथा अन्य भगवदीय समाज चरणाट पधारे हैं। श्रीमत् प्रभु चरण श्रीविट्ठलनाथजी का जन्म यहाँ हुआ है, महाअलौकिक " नन्द कूप " में से श्रीनन्दरायजी, श्रीयशोदाजी एवं ब्रजभक्त प्रकटे थे और " नन्द महोत्सव " हुआ था।

गीता स्टूडियों, नाथद्वारा